सूर्य-स्तोत्र

(साम्ब-पुराण से संकलित)

सूर्योपासना से सम्बन्धित पुराणों/उपपुराणों में "साम्ब-पुराण" का विशेष महत्त्व है। इसमें कथा है कि श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब कुष्ठरोग से ग्रस्त हो गये थे। उन्होंने वसिष्ठ एवं नारद के उपदेश से सूर्यदेव की उपासना की तो भगवान् सूर्य ने स्वप्न में दर्शन देकर उन्हें एक मन्त्र का उपदेश किया। साथ ही उन्होंने शाकद्वीप से मग-विप्रों को बुलाकर सूर्य की मूर्ति-प्रतिष्ठा कर उपासना करने का भी आदेश दिया। सूर्य के आदेशों का पालन करते हुए साम्ब ने इन मन्त्रों का जप किया तथा गरुड़ पर सवार होकर, शाकद्वीप से मग विप्रों को बुलाकर अपने राज्य में सूर्य-पूजा का प्रचार किया। सूर्य के द्वारा साम्ब को उपदिष्ट यह मन्त्र श्रुति-परम्परा में पर्याप्त प्रसिद्ध रही है। प्रातःस्नान कर इसका नित्य पाठ किया जाता रहा है। अतः यह मन्त्र श्रुति-परम्परा से यहाँ सर्वजनोपयोगार्थ संकलित है।

वसिष्ठ उवाच

स्तुवंस्तत्र ततः साम्बः कृशो धमनि सन्ततः।
राजन्नामसहस्रेण सहस्रांशुं दिवाकरम्॥1॥
खिद्यमानं तु तं दृष्ट्वा सूर्यः कृष्णात्मजं तदा।
स्वप्ने तु दर्शनं दत्वा पुनर्वचनमब्रवीत्॥2॥

सूर्य उवाच

साम्ब साम्ब महाबाहो शृणु जाम्बवतीसुत।
अलं नाम सहस्रेण पठस्वेमं स्तवं शुभम्॥3॥
यानि नामानि गुह्यानि पवित्राणि शुभानि च।
तानि ते कीर्त्तयिष्यामि श्रुत्वा वत्सावधारय॥4॥

ॐ विकर्त्तनो विवस्वांश्च मार्त्तण्डो भास्करो रविः।
लोकप्रकाशकः श्रीमांल्लोकचक्षुर्ग्रहेश्वरः॥5॥
लोकसाक्षी त्रिलोकेशः कर्त्ता हर्त्ता तमिस्रहा।
तपनस्तापनश्चैव शुचिः सप्ताश्ववाहनः॥6॥
गभस्तिहस्तो ब्रह्मा च सर्वदेवनमस्कृतः।
एकविंशतिरित्येष स्तव इष्टः मदा मम॥7॥
शरीरारोग्यदश्चैव धनवृद्धियशस्करः।
स्तवराज इति ख्यातस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः॥8॥
य एतेन महाबाहो द्वे सन्ध्येऽस्तमनोदये।
स्तौति मां प्रणतो भूत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते॥9॥
कायिकं वाचिकं चापि मानसं यच्च दुष्कृतम्।
तत्सर्वमेकजाप्येन प्रणश्यति ममाग्रतः॥10॥
एष जाप्यश्च होमश्च सन्ध्योपासनमेव च।
बलिमन्त्रोऽर्घमन्त्रश्च धूपमन्त्रस्तथैव च॥11॥
अन्नप्रदाने स्नाने च प्रणिपाते प्रदक्षिणे।
पूजितोऽयं महामन्त्रः सर्वव्याधिहरः शुभः॥12॥
एवमुक्त्वा तु भगवान् भास्करो जगदीश्वरः।
आमन्त्र्य कृष्णतनयं तत्रैवान्तरधीयत॥13॥
साम्बोऽपि स्तवराजेन स्तुत्वा सप्ताश्ववाहनम्।
पूतात्मा नीरुजः श्रीमांस्तस्माद्रोगाद्विमुक्तवान्॥14॥

इति श्रीसाम्बपुराणे रोगापनयने श्रीसूर्यस्तवराजः समाप्तः॥